पारम्परिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी का

दूसरा आञ्चलिक महाधिवेशन

बुन्देलखण्ड

समाज सृजन संवाद

१३ से १८ नवंबर १९९९

राम राजा प्रांगण, ओरछा

आयोजक

संस्कारनिष्ठ एवं लोकव्यापी साईंस टेकनॉलोजी प्रतिष्ठान

(PPST Foundation)

(पोस्ट बोक्स न. ४५२६ हौज़ खास, नई दिल्ली ११० ०१६)

प्राक्कथन

स्वतंत्रता के बाद भारत में जो विकास प्रणाली चली है उसमें आम जन की सक्रियता, शक्ति और विद्या की भागीदारी नगण्य रही है। फलस्वरूप जीवननिर्वाह के न्यूनतम साधन भी आम परिवारों को उपलब्ध नहीं हो पाये। पिछली तीन सदियों से पारम्परिक ज्ञान व कौशल की निरन्तर अवहेलना के कारण आज समाज में व्यापक रूप से श्रेष्ठता के सम्मान और व्यवसायिक मर्यादाओं की रक्षा का अभाव दिखता है। राजतन्त्र के संस्थागत प्रयास आम नागरिक के गौरव, विद्या और मेधा की रक्षा करने में अक्षम रहे हैं। लोकव्यापी और संस्कारनिष्ठ विकास के लिए आम जन की सक्रीयता एवं शक्ति के स्रोतों की पहचान और खोज में पी. पी. एस. टी. फाउण्डेशन प्रयासरत है। तीन पारम्परिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के राष्ट्रीय महाधिवेशनों का आयोजन क्रमशः १९९३, १९९५ और १९९८ में मुंबई, चैन्नई और वाराणसी में हुआ और पारम्परिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी का प्रथम अंचलिक सम्मेलन आन्ध्र देश के चिराला नगर में जून १९९९ में सम्पन्न हुआ। महाधिवेशनों की इस कड़ी से समाज निमार्ण के लिये एक महत्त्वपूर्ण स्रोत के रूप मे पारम्परिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी की पहचान विकसित हुई है। इन प्रयासों ने समाज में ऊर्ध्व गति की खोज को एक संगठित दिशा प्रदान की है। प्रस्तावित द्वितीय अञ्चलिक महाधिवेशन इस खोज में दिशा निर्देश के लिए अगला कदम है।

प्रस्ताव

सौ से अधिक सांस्कृतिक अञ्चलों के प्रवाह से गढ़ित है भारतवर्ष। भजन, भावना, भाषा, भोजन, भूषा और भवन में आञ्चलिक अस्मिता रसी-बसी है। मानव के सुसंस्कार आञ्चलिक इकाईयों में ही संचित होकर व्यापक समाज रचना के अधिकरण बनते हैं। जहाज के पंछी की तरह देशज परीधि से बन्धे रहना मानव की नियति है। आज का विकास तन्त्र और वैधानिक तन्त्र आम जन के संस्कार पिण्ड के प्रति उदासीन होने के कारण सामाजिक अव्यवस्था और मानवीय पीड़ा का स्रोत बना हुआ है। आम जन की सक्रिय भागीदारी से वंचित विकास आज हमें समाज सृजन के विषय में मौलिक प्रश्नों को पूछने, परिष्कृत करने और हल ढूँढनें के लिए विवश करता है।

विकास के लिये स्वावलम्बन की इकाई क्या हो इस पर चिन्तन राष्ट्रीय संग्राम के दिनों से चलता रहा है। व्यक्ति, ग्राम तथा राष्ट्र के स्वावलम्बन को लेकर विभिन्न वैधानिक शक्तियां कार्यरत रही हैं। राज्यों के स्वावलम्बन की बात भी समय समय पर उठती रही है। आज तो डिस्ट्रिक और ब्लाक स्वावलम्बन की चर्चा भी है। इन प्रयासों के चलते वस्तुतः सत्तातन्त्र की विभिन्न गद्दियां अपनी मर्यादा खो चुकी हैं और लोकसिद्ध संस्कार पिण्ड से निरंतर संघर्ष कर खलल पैदा कर रहीं है। मिट्टी, पानी और अन्य भौतिक संसाधन अव्यवस्थित और संस्कारहीन हो गये हैं। वनस्पति अराजकता की शिकार और पशु त्राहिग्रस्त हैं। लोकविद्याऐं हेयदृष्टि से पीडित हैं। मनुष्य के बीच द्वन्द्व सुलझने की बजाये उलझते और दबाये जा रहे हैं। पारस्परिकता के अभाव से आम जन में असुरक्षा और स्वार्थ का व्यापक विस्तार हुआ है। विश्वासघात से घिरा नागरिक अपनी गरिमा का पुनः इच्छुक है। इस संदर्भ में आञ्चलिक स्वावलम्बन की पहल आज मौलिक रूप से प्रासंगिक है।

खुशहाल अञ्चल ही खुशहाल भारतवर्ष की नीव होंगे। इन अञ्चलों में बुन्देलखण्ड सब से बड़ा है और एक अत्यंत गौरवशाली परम्परा का प्रतीक भी है। ऋषियों और वीरों की यह तपोभूमि, यमुना और गंगा के वैभव का यह पूरक, विविध कला कौशल से सम्पन्न व्यवसायिक और वनवासि जातियों की यह कर्मभूमि, साहित्य और शिल्प का यह तेजस् स्थल, खनिज का यह भण्डार, कृषि एवं उद्योगों का यह पिण्डारा, प्राचीन काल से प्रसिद्ध यह दशार्ण नामक देश आज बिखर गया है। चम्बल से टौंस तक, नर्मदा से यमुना तक के भूखण्ड में बसा दो-ढाई करोड व्यक्तियों का यह समाज आज सामाजिक और वैधानिक अराजकता की आग मे झुलस रहा है। बुन्देली समाज पुनः कैसे स्फुरित हो और इस भूखण्ड को समृद्ध अञ्चल के रूप में कैसे सुसज्जित करें - यही आज की चुनौती है। आञ्चलिक स्वावलम्बन का प्रयास ही बुन्देलखण्ड की अस्मिता प्रतिष्ठित कर समाज निर्माण के लिये अपेक्षित सक्रियता को जन्म दे सकता है। प्रस्तावित बुन्देलखण्ड समाज सृजन संवाद का आयोजन इस ओर एक ठोस कदम है।

* विभिन्न सांस्कृतिक अञ्चलों का सम्मेलन * राम राजा सरकार के दरबार में

त्कृष्ट हुनर, विद्या और तकनीकि की प्रदर्शनी * लोहा, मिट्टी, लकडी, रेशम, पत्थर और स

आमंत्रण

समाज सृजन संवाद का मूल उद्देश्य बुन्देलखण्ड की आञ्चलिक अस्मिता तथा पारम्परिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की पहचान और समझ विकसित करना है। इस समझ के आधार पर विकास की वर्तमान प्रणाली से विघटित हो रहे समाज के सभी अंगों, वर्गों और समूहों के बीच एक ऐसा संवाद स्थापित करने का प्रयास इस महाधिवेशन के माध्यम से होगा जिसके द्वारा पारस्परिकता, न्याय व सृजनशीलता पर आधारित समृद्ध समाज की स्थापना संभव हो। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बुन्देलखण्ड के इतिहास, साहित्य, कला, संस्कृति, लोकविद्या, संसाधन, कृषि, मिट्टी, पानी, पशुधन, वन, जैव सम्पदा आदि के विशेषज्ञ, विद्वान, विचारक, किसान, विभिन्न पेशे धन्धे से जुड़े जाति समूहों आदि की सक्रिय भागीदारी आमंत्रित है। विषयों से संबन्धित आप के लेख, आलेख, पर्चे हमें सितंबर के अन्त तक उपलब्ध हो जाने पर सारांश पुस्तिका में समावेश सुलभ होगा।

छः दिनों के इस महाधिवेशन में प्रासंगिक विषयों पर परिसंवाद, संभाषण, संगोष्ठी, कार्यशाला, प्रदर्शनी, हाट आदि कार्यक्रमों का आयोजन होगा। इनमें बुन्देलखण्ड का लोकव्यापी उद्योगीकरण, अस्मिता-अनुकूल आधुनिक संसाधन व्यवस्था, ऊर्जा, आवास, स्वास्थ्य, समृद्ध कृषि, वन, पशु, जल आदि की सुंदर सुदृढ व्यवस्था के लिये विचारों का आदन-प्रदान होगा। राम राजा सरकार के दरबार में बुन्देलखण्ड की समस्याओं पर जन सुनवाई होगी। इस संवाद में देश के विभिन्न सांस्कृतिक अञ्चलों के प्रतिभागीयों का विशेष स्वागत है।

उद्देश्य

- विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में लोक परम्पराओं की पुनः प्रतिष्ठा।
- बुन्देलखण्ड की आञ्चलिक अस्मिता की समझ का विकास।
- न्याय, पारस्परिकता, सृजनशीलता व समृद्धि की खोज के लिए खुला संवाद।
- बुन्देलखण्ड के लोकव्यापी और संस्कारनिष्ठ विकास के संकल्प का अनुष्ठान।

न्देलखण्ड की समस्याओं पर जन सुनवाई * कारीगर जातियों की पंचायत *

ीय उत्पादन की वस्तुओं का हाट * लोक कला और लोक संगीत के कार्यक्रम *

संवाद आफ़िस

अध्यक्ष	राम राजा सरकार
उपाध्यक्ष	मधुकर शाह जू देव
	नवज्योति सिंह
सचिव	कृष्ण गाँधी
	अरुण कुमार
कोशाध्यक्ष	सुनन्दा कीर्तने

क्षेत्रीय सचिव

चित्रकूट-बांदा-महोबा

अवधेश गौतम, बलखण्डी नाका, बांदा। ०५१९२-२२८०१ (आ.) ६६९०१ (का.)

दीपक, ग्रामोदय संस्थान, ग्रा. पो. राजापुर, चित्रकूट।०५१९५-६२७०

रामदत्त तिवारी, बसंत सेवा संस्थान, मलकपुरा, महोबा। ०५२८१-४४१९८

जालौन-हमीरपुर

हरिमोहन पुरवार, बुन्देलखण्ड संग्रहालय, भरत चौक, उरई। ०५१६२-५२८१५

गजराज सिंह, ग्रा. पो. चितौरा, जिला जलौन। ०५१६८-२६७०४

अवधेश नारायन तिवारी, ३८, चौबे कालोनी, छत्तरपुर। ०७६८२-२२५४५

झाँसी-ललितपुर

मधु श्रीवास्तव, ३८०/१ बी, सिविल लाईंस, झाँसी। ०५१७-४४३४७४

संतोष शर्मा, १८८, सुभाषपुरा, ललितपुर। ०५१७६-७३१७७

कपिल देव त्रिपाठी, ६६६, आजादपुर, ललितपुर। ०५१७६-७५१९४

टीकमगढ-छत्तरपुर

दुर्गाप्रसाद आर्य, ग्रा. पो. तरीचर कलाँ वाया निवाडी, जिला टीकमगढ।

लाल सिंह गौड, ग्रा. पो. ककावनी, तह. पृथ्वीपुर, जिला टीकमगढ।

अवनीश प्रताप सिंह, ४७, नयी कालोनी, छत्तरपुर। ०७६२२-५१६३९

पन्ना-कटनी-सतना

सन्तोष सिंह, ग्रा.महोला, पो. धनगवाँ, तह. सिहोरा, जि. जबलपुर। ०७६२४-६८२१३

निर्भय सिंह, जीवन विकास प्रशिक्षण केन्द्र, मु.पो.मझगवाँ (बरही रोड), कटनी। ०७६२६-७५२०६

ब्रजवासी भाई पटेल, ग्रा. पो. रामस्थान, जिला सतना।

सागर-दमोह

बद्री प्रसाद जैन, सी-३२, गौर नगर, सागर विश्वविद्यालय, सागर। ०७५८२-२३८५६

विशाल प्रसाद, ३०७, सुभाष कालोनी, दमोह। ०७८१२-३२१५६

होशंगाबाद-रायसेन-विदिशा-नरसिंहपुर

राकेश दीवान, कसेरा मोहल्ला, होशंगाबाद। ०७५७४-५२४८७

सुशीला दूबे, मु. पो. टयोंड़ा, तह. गंजबसोदा, जिला विदीशा।

ग्वालियर-भिण्ड-मुरेना-दतिया-शिवपुर

रजनी अर्जरिया, माला वाली गली, मुडियन का कुआँ, दतिया। ०७५२२-३५७१९, ३५४३२

राज गोस्वामी, अनामय आश्रम के सामने, सिविल लाईंस, दतिया। ०७५२२-३३८६३

संयोजक कार्यक्रम समिति

शिव कुमार श्रीवास्तव, कुलपति, सागर विश्वविद्यालय, सागर। ०७५८२-२४४७७

अशोक वाजपेयी, कुलपति, महात्मा गाँधी हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा। ०११-३३८१७०८

संयोजक प्रचार समिति

शंकरलाल मेहरोत्रा, ३५९, सिविल लाईंस, झाँसी। ०५१७-३८२५०३

पी वी राजगोपाल, गाँधी भवन, श्यामला हिल्स, भोपाल। ०७५५-५४३८००, ५३९५६०, ५३९९५२

हरभूषण सिंह जू देव, ग्रा. पो. सरावन, तह. माधौगढ, जिला जालौन। ०५१६८-२२३०६

संयोजक स्वागत समिति

जगदीश तिवारी, राजा राम मंदिर के पीछे, ओरछा। ०७६८०-५२६१९, ५२६९५

नरोत्तम स्वामी, २४०/३ए, सिविल लाईंस, कचहरी चौराहा, झाँसी। ०५१७-४७०९११

केन्द्रीय सचिवालय

कृष्ण गाँधी

७८ मिशन कम्पौण्ड, पी डब्लु डी गोदाम के सामने, झाँसी २८४ ००३

टेलिफ़ोन ०५१७-४४४१९०, फ़ेक्स ०५१७-४५१०८८, ४७०३१६

सूचनायें

- अपने भाषण अथवा लेख के सारांश (१००० शब्दों तक) की दो प्रतियाँ ३० सितंबर से पहले केन्द्रीय सचिवालय के पते पर भेज दें।
- किसी सत्र अथवा कार्यक्रम को आयोजित करने के लिऐ केन्द्रीय सचिवालय से संपर्क करें।
- इस अधिवेशन संबंधी सुझाव के लिऐ अपने क्षेत्रीय सचिव व केन्द्रीय सचिवालय से संपर्क करें।
- प्रत्येक प्रतिभागी को रु १५० पंजिकरण शुल्क प्रदान करना होगा।
- महाधिवेशन के आयोजन में आपके आर्थिक एवं अन्य सहयोग की अपेक्षा है।
- कृपया महाधिवेशन की जानकारी अपने मित्रों को दें।

बैंक चेक या ड्राफ़्ट इस नाम पर केन्द्रीय सचिवालय भेजें -

"पी पी एस टी फ़ाउन्डेशन, नई दिल्ली" अथवा "पी पी एस टी कॉंग्रेस, झाँसी"

(५०% आई टी एसम्प्शन, यु/एस ८०जी)